राष्ट्रीयता के खिलाफ षड्यन्त्र है धर्मान्तरण

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्तव्य से विमुख हो रहे अर्जुन को स्वधर्म का महत्त्व बताते हुए कहा कि अच्छी तरह आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणों की कमी वाला अपना धर्म श्रेष्ठ है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है-

श्रेयोन्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।

स्वधर्मआराम-पालन में यदि सदा सुख-, धनसम्पत्ति-, मानबड़ाई-, आदरसत्कार आदि ही मिलते तो सम्भवतः सर्वत्र धर्मात्मा ही नजर आते। परन्तु - स्वधर्म का पालन सुख अथवा दुःख को देखकर नहीं किया जाता अपितु भगवान् अथवा शास्त्र की आज्ञा को देखकर निष्काम भाव से किया जाता है। इसलिये स्वधर्म अर्थात् अपने कर्तव्य का पालन करते हुए यदि कोई कष्ट आ जाए तो वह कष्ट भी उन्नति करने वाला होता है। वास्तव में यह कष्ट नहीं अपितु तप होता है। तप सदैव स्वहित के लिए होता है जबकि कर्तव्य परहित के लिये।

द्वापर का वह युग जब इस धरती पर न तो उपनिवेशवादी सोच और साजिश का अंग ईसाइयत थी और न ही विस्तारवादी सोच और मजहबी जुनून का पर्याय इस्लाम। तब स्वधर्म का मतलब कर्तव्य मात्र से था। वैसे भी धार्मिक सहिष्णुता भारतीय संस्कृति का आधार रही है। यहाँ किसी उपासना पद्धति का कभी विरोध नहीं किया गया। उसी परम्परागत भावना के कारण दुनियाँ की तमाम विस्थापित जातियों की शरणस्थली भारत बना। परन्तु यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि भारत में हिन्दुओं का धर्मान्तरण मुस्लिम आक्रान्ताओं तथा यूरोप से आने वाले ईसाई उपनिवेशवादी साजिश ने आतंक, भय, प्रलोभन, छलकपट के - बाह्य -माध्यम से बहुत बड़ी मात्रा में किया। इन्हीं धर्मान्तरित नागरिकों में राष्ट्र निष्ठा उत्पन्न करके भारत के विरुद्ध गम्भीर षड्यन्त्र हुए और आज भी निरन्तर

जारी है। स्वामी विवेकानन्द जी ने एक बार ईसाई उपनिवेशवादी सोच तथा इस्लाम के मजहबी विस्तारवाद पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि "मनुष्य जितना अधिक स्वार्थी होता है उतना ही अधिक अनैतिक होता है, यही जातियों के बारे में भी सत्य है।" जिन जातियों ने स्वयं को सीमाओं में बाँध लिया है, वे विश्व में सर्वाधिक दुष्ट रही हैं। इस्लाम में धर्मान्तरण और हर प्रकार की असहमति का उन्मूलन मुस्लिम राष्ट्र का आदर्श रहा है। मुस्लिम राष्ट्रों का इतिहास इस बात का गवाह है कि वहाँ किस तरह शरीयत और हदीस, हमेशा बुद्धि और विवेक पर भारी सिद्ध हुए हैं। विजित नगरों की मुख्य इमारतों एवं धार्मिक स्थलों को तोड़कर मस्जिदें खड़ी करना मुस्लिम आक्रान्ताओं का पहला कार्य होता था। हिन्दू से इस्लाम में धर्मान्तरण करने वालों के लिए धन तथा सार्वजनिक नौकरियों के पुरस्कार घोषित किये जाते थे। हिन्दू धार्मिक एवं सामाजिक नेतृत्व का सुनियोजित ढंग से दमन किया गया। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि पाकिस्तान निर्माण की प्रक्रिया के उन क्रूर कार्यों में मुसलमान आक्रान्ताओं के शासन में आतंक, भय और प्रलोभन से धर्मान्तरित हुए नव मुस्लिम समुदाय का सबसे बड़ा सहयोग रहा। जिनजिन क्षेत्रों में धर्मान्तरण से मुस्लिमों की संख्या बढ़ी तथा हिन्दू अल्पमत - हुए, वही क्षेत्र कटकर भारत से अलग हुए और स्वतंत्र भारत में वही क्षेत्र आतंकवाद से त्रस्त हैं जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हैं। आज भी इस्लाम की मुख्य निगाह भारत पर है। उसका लक्ष्य मोरक्को से मलेशिया तथा सम्पूर्ण दक्षिण एशियाई पट्टी को इस्लाम के झण्डे के नीचे लाने की योजना है। सन् 1981 में मीनाक्षीपुरम् (तमिलनाडु) में हिन्दुओं का सामूहिक धर्मान्तरण और मलेशिया में हिन्दुओं के साथ अत्याचार आदि उसी की कड़ी हैं।

इसी प्रकार ईसाइयत की उपनिवेशवादी साजिश ने भी भारत के अन्दर धर्मान्तरण धार्मिक सद्भाव अथवा आध्यात्मिक चेतना की भावना से नहीं किया। इस देश के अन्दर यहाँ के मूल निवासियों को अपनी मातृभूमि के प्रति आस्था को समाप्त करने और उसका राजनीतिक लाभ उठाने के दृष्टिकोण से प्रेरित है। इसके

पीछे भयंकर उपनिवेशवादी साजिश काम कर रही है। धर्म परिवर्तन के बाद धर्मान्तरित व्यक्ति की राष्ट्रीयता बदलने का कुचक्र प्रारम्भ हो जाता है। उसकी आस्था को इस देश की भूमि के इतिहास और संस्कृति से विच्छिन्न किया जाता है। धर्मान्तरण के कारण ही भारत के पूर्वोत्तर राज्यों नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय ईसाई बहुल होकर अलगाववाद की चपेट में हैं तो शेष अन्य राज्यों में भी भीषण धर्मान्तरण तथा घुसपैठ के कारण खतरनाक जनसांख्यिकी असन्तुलन की स्थिति - पैदा हो गई है। पूर्वोत्तर के राज्यों के बाद अब छत्तीसगढ़, झारखण्ड आदि में अलगाववादी गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं तो देश के अन्य प्रान्तों में भी धर्मान्तरण की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को तेजी के साथ बढ़ाने का षड्यन्त्र चल रहा है। जनसांख्यिकी असन्तुलन के कारण जहाँ सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सद्भाव खतरे में पड़ा है वहीं राष्ट्रीय सुरक्षा को भी अब निरन्तर चुनौती दी जा रही है। धर्मान्तरण राष्ट्रान्तरण है, राष्ट्र और उसकी पुरातन संस्कृति को नष्ट करने का एक षड्यन्त्र है। यह राष्ट्रीयता के साथ महज धोखा है। आजादी के तत्काल बाद विभिन्न राज्य सरकारों ने इसकी गम्भीरता को समझा था। सन् 1954 में मध्य प्रदेश की कांग्रेस सरकार ने न्यायमूर्ति श्री भवानी शंकर नियोगी की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित करके धर्मान्तरण की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगाने की वकालत की थी। इसी प्रकार का प्रस्ताव उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल आदि राज्यों की तत्कालीन सरकारों ने भी पारित किये थे। देश का उच्चतम न्यायालय भी धर्मान्तरण की गतिविधियों को अवैध एवं असंवैधानिक घोषित कर चुका है। राष्ट्र और उसकी संस्कृति के खिलाफ साजिश के तहत किसी भी कारण से हो रहे धर्मान्तरण पर प्रभावी अंकुश लगाने की आवश्यकता है अन्यथा जिस प्रकार का षड्यन्त्र और जिस भारी पैमाने पर धर्मान्तरण चल रहा है उससे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की जो तस्वीर बनेगी वह अत्यन्त ही भयावह होगी।